10

प्रभु के अन्तिम प्रेम पत्र

(2; 3)

नये नियम में पत्रों की भरमार है अर्थात नये नियम की सताइस में से इक्कीस पुस्तकें कलीसियाओं तथा मसीही लोगों के नाम पत्र ही हैं। सभी अपने लोगों के लिए प्रभु के प्रेम या स भाल की अभिव्यक्तियां हैं। उसके लिखे अन्तिम पत्र इसी पुस्तक अर्थात प्रकशितवाक्य में ही मिलते हैं, जिसका हम अध्ययन कर रहे हैं।[1] अध्याय 2 और 3 में हमें एशिया माइनर की मण्डलियों के नाम यीशु के सात पत्र मिलते हैं।[2]

कुछ लोग चकित हैं कि पत्रों को पुस्तक में क्यों शामिल किया गया। अध्याय 1 में यीशु की महिमा देखने के बाद हम अध्याय 4 और 5 में स्वर्ग की शान देखने के लिए तैयार हैं। इसके अध्याय 2 और 3 में हम कलीसियाओं के दोष के बारे में पढ़ते हैं। कइयों ने सुझाव दिया है कि ये पत्र बाद में पुस्तक में शामिल किए गए थे, परन्तु हस्तलिपि के प्रमाण से यह संकेत मिलता है कि वे आर भ से ही प्रकाशितवाक्य का भाग थे।

पत्रों को क्यों मिलाया गया *है?* पहली शताब्दी में मसीही लोगों के लिए इनका क्या महत्व था और आज इनका क्या महत्व है? इस पाठ में हम सात पत्रों को विस्तार से देखने की तैयारी करते हुए इन तथा अन्य प्रश्नों का उत्तर देना चाहते हैं।

उद्देश्य समझाया गया

इन पत्रों से कई उद्देश्य पूरे हुए। पहली बात तो यह कि यह पत्र पुस्तक को व्यावहारिक बनाने में सहायक हैं। पत्रों के बिना, 1:3 में लिखी हुई बातों को ''सुनने'' और ''मानने'' का अर्थ बहुत कम होता है क्योंकि अध्याय 2 और 3 में शेष पुस्तक से सबसे अधिक स्पष्ट आज्ञाएं हैं।

दूसरा, पत्रों में महिमा पाए हुए प्रभु के दर्शन से 4 से 22 अध्यायों वाले दर्शनों तक जाने का मार्ग मिलता है। कलीसियाओं के नाम यीशु का तिहरा उद्देश्य था:

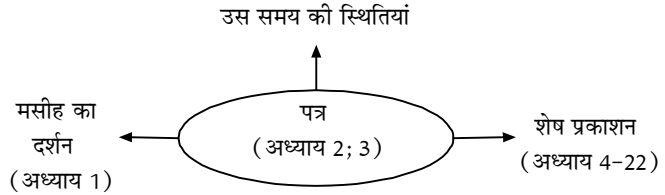

(1) वे अध्याय 1 की ओर *पीछे को* देखते हैं। हर पत्र के आर भ में हमें मसीह का एक विवरण मिलता है और आम तौर पर इसे दर्शन के आर भ से लिया गया है।[3] (2) वे यूहन्ना के समय की स्थितियों के *आस-पास* देखते हैं। हर पत्र के केन्द्र में हमें समयों के लिए एक भावना मिलती है, क्योंकि यीशु प्रत्येक मण्डली को विशेष चुनौती देता है। (3) वे 4 से 22 अध्यायों की ओर *आगे को* देखते हैं। पत्रों के निष्कर्षों में शेष पुस्तक के आने वाले विषयों की प्रतिज्ञाएं हैं।[4] उदाहरण के लिए इफिसुस की कलीसिया के नाम पत्र में जीवन के वृक्ष में से खाने की प्रतिज्ञा है (2:7) और जीवन के वृक्ष के विषय में हम अन्तिम अध्याय में पढ़ेंगे (22:2)। सरदीस में ''जय पाने वालों'' से प्रतिज्ञा की गई थी कि उन्हें ''श्वेत वस्त्र पहिनाया जाएगा'' (3:5); अध्याय 7 में हम ''श्वेत वस्त्र पहिने, ... सिंहासन के सा हने और मेमने के सा हने खड़ी'' (आयत 9) ''बड़ी भीड़'' के बारे में पढ़ेंगे।

सबसे महत्वपूर्ण, ये पत्र पुस्तक में मसीह के स पूर्ण उद्देश्य के पूरा होने के लिए आवश्यक थे: उसने कुचले हुए मसीही लोगों को प्रोत्साहित करने और उन्हें इससे भी बड़े सताव को सहने के लिए तैयार करना चाहा, क्योंकि वह उन्हें आश्वस्त करना चाहता था कि अन्त में जीत भलाई की ही होगी। उसके ऐसा करने से पहले, एक प्रश्न का उत्तर जानना आवश्यक था कि *क्या वे* आने वाले तूफ़ान का सामना करने के लिए *तैयार थे?* प्रभु विद्रोही और आज्ञा न मानने वाले लोगों को आशीष नहीं दे सकता।[5] कलीसियाओं को प्रोत्साहित करने से पहले प्रभु के लिए उन्हें परख लेना आवश्यक था। फिर वह उन्हें उनकी सामर्थ बताकर उनकी निर्बलताओं में सुधार करके उनके भय में उन्हें शांति दे सकता था।

इसलिए पत्रों का मु य उद्देश्य मण्डलियों के सामने आने वाले झगड़े के लिए उन्हें *तैयार* करना था। इन पत्रों का अध्ययन पूरा करने से पहले हम देखेंगे कि ये हमें आत्मिक युद्ध के लिए भी तैयार होने में सहायक हो सकते हैं।

नमूना बताया गया

पत्रों के नमूने का पता लगाना कठिन नहीं है। सब का आर भ एक ही तरह से होता है, सुनने के बारे में अन्त के निकट के हमेशा एक जैसे शब्दों का इस्तेमाल हुआ है और ''जय पाने वाले'' के लिए सब में प्रतिज्ञाएं हैं, परन्तु इस ढंग का पूरा पता तुरन्त नहीं चल सकता। पत्रों की तुलना के लिए आपकी सहायता के लिए नीचे दिया गया चार्ट आपके भरने के लिए है। इसे ध्यान से देखें, उपयुक्त स्थान पर अध्याय और आयत लिखें।

कुछ अपवादों के साथ, हर पत्र में सात बातें हैं: (1) अभिवादन, (2) यीशु का विवरण, (3) पूरी मण्डली की सराहना, (4) पूरी मण्डली को ताड़ना (5) चेतावनी और धमकी, (6) समझाना और (7) प्रतिज्ञा।[6]

अभिवादन मु यतया हर पत्र में एक जैसा ही है (''[फलां नगर की] कलीसिया के दूत को लिख''), और *ताड़ना* भी (''जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है'')। जैसा कि हमने देखा है, दो बातें शेष पुस्तक से जुड़ी हैं। अधिकतर पत्रों में *यीशु का विवरण,* अध्याय 1 वाले दर्शन से लिया गया है और *प्रतिज्ञाएं* पुस्तक के

अगले भागों में विस्तार में बताई गई हैं। इस कारण पत्रों की मु य भिन्नताएं (3), (4), और (5) भागों में मिलती हैं। चार्ट पर विशेषकर ध्यान दें कि दो कलीसियाओं की *सराहना* नहीं की गई, जबकि दो कलीसियाओं को ताड़ा नहीं गया और इसलिए कोई *चेतावनी* भी नहीं है। जैसा कि हम देखेंगे, ये अन्तर महत्वपूर्ण हैं।

आकार की एक और विशेषता पर भी ध्यान देना आवश्यक है: पहले तीन पत्रों में ताड़ना प्रतिज्ञा से पूर्व है, जबकि अन्तिम चार पत्रों में प्रतिज्ञा ताड़ना से पूर्व है। जैसा कि हमने पहले कहा है, प्रकाशितवाक्य में सात का उल्लेख अक्सर तीन और चार के समूहों (या चार और तीन) में होता है। प्रकाशितवाक्य अस बद्ध दृश्यों की मिलावट नहीं है, जैसा कि कुछ लोग मानते हैं; इसमें ज़रा भी लापरवाही नहीं है।

यदि आप सात पत्रों के हमारे अध्ययन से अधिक से अधिक लाभ लेना चाहते हैं, तो उपयुक्त हवालों को जोड़कर पहले चार्ट पूरा करें। आर भ करने के लिए सहायता हेतु अगले पाठ के मु य शीर्षक ''हृदय की समस्या वाली कलीसिया'' के बाद वचनों को देखें। ये वचन ही आपको ''इफिसुस'' स्त भ के रिक्त खानों में लिखने हैं। आयतों की प्रति उतारते हुए क्रम में अन्तर पर ध्यान दें: इफिसुस की कलीसिया की सराहना 2 और 3 आयतों से आर भ होती है, परन्तु यह आयत 6 में पूरी होती है। पत्रों में कहीं-कहीं आपको ऐसी छोटी-छोटी भिन्नताएं मिलेंगी।

''इफिसुस'' के नीचे खानों को भरने के बाद आप स्वयं चार्ट के शेष खाने भर सकेंगे। सहायता की आवश्यकता होने पर थुआतीरा पर पाठ (''वह कलीसिया जहां की सदस्य इज़ेबेल थी'') देखें। मैंने संरचना को ध्यान में रखकर सहायता के लिए उस पाठ को सात भागों में बांटा है।

जिन बातों की समीक्षा की गई

स्वयं चार्ट भरने पर आपको उन पत्रों का पूरा अहसास हो जाएगा, जिनका हमें विस्तार में अध्ययन करना है। (अपने उत्तरों को आप इस पुस्तक के अन्त में दिए गए उत्तरों से मिलाकर भेज सकते हैं।) यीशु द्वारा कलीसियाओं में घूमने, उन्हें परखने और आने वाले कष्ट के लिए उन्हें तैयार करने को न भूलें। आपको क्या लगता है कि उन्हें क्या सबक चाहिए थे। हैरोल्ड हेज़लिप ने यह सुझाव दिया है:

> हर पत्र में एक विशेष बात अर्थात अकेला स्पष्ट शब्द या चुनौती देने वाला वाक्यांश है, जिससे पूरा संदेश समझ आ जाता है। इन अलग-अलग बातों को जोड़ने पर हमें सात मु य बातों वाला अच्छा विवरण मिल जाएगा, जो आज मसीह अपनी कलीसिया को देना चाहता है।[7]

फिर हेज़लिप ने प्रत्येक कलीसिया के लिए मु य शब्द सुझाए: इफिसुस की कलीसिया को अपने पहले *प्रेम* में लौटने की आवश्यकता थी (2:4); स्मुरने की कलीसिया को *कष्ट*

के लिए तैयार होने की आवश्यकता थी (2:10); परगमुम की कलीसिया को *सच्चाई* के लिए स्थिर रहने की आवश्यकता थी (2:14, 15); थुआतीरा की कलीसिया को बड़ी *पवित्रता* की आवश्यकता थी (2:20); सरदीस की कलीसिया में *ईमानदारी* की आवश्यकता थी (3:1); फिलाडेल्फिया की कलीसिया से *सुसमाचार सुनाने* के अवसरों का लाभ उठाने का आग्रह किया गया (3:8क); लौदीकिया की कलीसिया को *समर्पण* में कमी के लिए डांटा गया (3:15)।[8] हेज़लिप ने निष्कर्ष निकाला ''एक मण्डली की सातों विशेषताओं अर्थात प्रेम, कष्ट, सत्य, पवित्रता, ईमानदारी, सुसमाचार सुनाने और समर्पण को जोड़ लें तो हमें परमेश्वर के लोगों का एक आदर्श समाज मिल जाएगा।''[9]

पत्रों को पढ़ते हुए, मुझे लगता है कि आप आज की कलीसिया के लिए व्यावहारिक शिक्षा से प्रभावित होंगे। हमें आसिया की सात कलीसियाओं के नाम पत्रों में मिलने वाले पाठों *की आवश्यकता* है।

सारांश

एशिया माइनर के मसीही लोगों के रास्ते में रुकावट थी। हमारे रास्ते में भी रुकावटें हैं। यह वैसी ही समस्या हो सकती है, जैसी उन पर आई थी या हो सकता है कि वैसी न हों, परन्तु इससे हमारे प्राण परीक्षा में पड़ जाते हैं। यीशु चाहता था कि हम सब आरम्भिक मसीही जीवन के तूफ़ानों का सामना करने के लिए तैयार हों; इसलिए उसने उन्हें परखा ताकि वह उन्हें सामर्थ दे और उनकी कमज़ोरियों को दूर करे। याद रखें: प्रभु विद्रोह करने वालों और आज्ञा न मानने वाले लोगों को आशीष नहीं दे सकता।

प्रभु चाहता है कि *हम* आने वाली हर बात के लिए तैयार रहें। तैयारी के लिए तीन बातें आवश्यक हैं: अपनी शक्तियों और निर्बलताओं का ईमानदारी से अवलोकन, अपनी शक्तियों को बढ़ाना और अपनी निर्बलताओं में सुधार करना। अपने अवलोकन में सहायता के लिए किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढ़ें, जिसका आप स मान करते हों और आपको उस पर भरोसा हो। फिर अपनी शक्तियों को बनाते और अपनी कमियों में सुधार करते हुए समर्पित हो जाएं।

हम में से हर किसी को अपने आप से पूछना चाहिए, ''क्या मैं जीवन के युद्धों के लिए तैयार हूं?''; ''उन युद्धों की तैयारी के लिए मुझे किस चीज़ की आवश्यकता है?''; ''क्या मैं जो कुछ भी करना पड़े, वह करने को तैयार हूं?''[10] इस चुनौती में परमेश्वर आपको आशीष दे।

टिप्पणियां

[1]इस वाक्य में माना गया है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक डोमिशियन के शासन के पिछले भाग में लिखी गई थी। [2]इस पुस्तक के परिचायक पाठ ''प्रकाशितवाक्य की सात बातें जो आपको पता होनी चाहिए'' में मैंने इस बात पर ज़ोर दिया था कि प्रकाशिवाक्य मूल रूप में ''उस समय की विद्यमान सात कलीसियाओं''

के नाम लिखी गई थी। मैं फिर से इस बात पर ज़ोर देता हूं कि यह सात कलीसियाएं यूहन्ना के समय अस्तित्व में होने वाली वास्तविक मण्डलियां थीं *न* कि ''कलीसिया के सात युगों'' को दर्शाने वाली। [3]इसका हमें यह अपवाद मिलता है: लौदीकिया की कलीसिया के नाम पत्र में ही अध्याय 1 से लिया गया है (1:5; 3:14)। [4]शेष प्रकाशितवाक्य से कुछ प्रतिज्ञाओं का स बन्ध स्पष्ट है; दूसरे स बन्ध कम स्पष्ट हैं। प्रत्येक पत्र का अध्ययन करते हुए अधिकतर स बन्धों की ओर ध्यान दिलाया जाएगा। [5]उदाहरण के रूप में, देखें यहोशू 7:1-26. [6]इन सात तत्वों को नया नाम दिया जा सकता है, जिससे सभी उसी पत्र से आर भ हैं। उदाहरण के लिए, आज्ञा (''दूत को ...''), स्वभाव (यीशु का विवरण), सराहना, निंदा, सुधार (ताड़ना), पुकार (''सुनो आत्मा क्या कहता है'') और चुनौती (''जो जय पाए'')। मुझे वे आसानी से याद हो जाते हैं जब सभी का आर भ एक ही अक्षर से *न* होता हो। [7]हैरोल्ड हेज़लिप, *द लॉर्ड रेन्स: ए सर्वे ऑफ़ द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (अबिलेन, टैक्सस: हैरल्ड ऑफ़ ट्रुथ, तिथि नहीं), 5. [8]वही, 5, 6 (हवाले जोड़े गए)। [9]वही, 6. [10]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में करना हो, तो जो मसीही नहीं हैं उन्हें बता देना चाहिए कि पहले उन्हें बपतिस्मा लेकर यीशु में अपने विश्वास को व्यक्त करना आवश्यक है (प्रेरितों 2:36-38)।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. हस्तलिपि के प्रमाण के अनुसार, क्या सात कलीसियाएं हमेशा से प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का भाग थीं?
2. पाठ के अनुसार पत्रों के कौन से तीन उद्देश्य हैं? क्या आप किसी और स भावित उद्देश्य पर विचार कर सकते हैं? मु य उद्देश्य क्या था?
3. पाठ में सुझाव है कि पत्रों ''का तिहरा उद्देश्य है।'' इसका क्या अर्थ है?
4. पाठ में सुझाव है कि यीशु कलीसियाओं को अपनी शक्तियों में *दृढ़* अपनी कमज़ोरियों में *सुधार* और अपने भयों में *शांति* देना चाहता था। चर्चा करें कि यह प्रभु की बात से कैसे मेल खाता है कि हमें दूसरों के लिए करना चाहिए (2 तीमुथियुस 4:2)।
5. पत्रों की सात कौन सी बातें हैं।
6. क्या आपने चार्ट पूरा कर लिया है? हो सके तो अपने चार्ट की तुलना किसी और द्वारा भरे गए चार्ट से करें।
7. हैरोल्ड हेज़लिप ने सातों मण्डलियों के अभिवादन को संक्षिप्त करने के सुझाव के लिए कौन से मु य शब्द दिए हैं?
8. क्या आपने अपनी शक्तियों और अपनी कमज़ोरियों का पता लगाने के लिए अपनी परख करने का समय निकाला है? क्या इस अवलोकन में आपको सहायता की आवश्यकता है?